Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

नासिरा शर्मा के उपन्यास 'पारिजात' में बिखरते रिश्तों का सच

Rajni Sharma[1]* Dr. Gyani Devi Gupta[2]

[1] Research Scholar

[2] Department of Hindi, University College of Basic Science and Humanity, Guru Kashi University, Talwandi Sabo, Bathinda

सार – ***जब भी दुनिया में सांस्कृतिक एकता के इतिहास की बात होती है तो भारत का जिक्र होना लाजमी ही है। यहां के संस्कारों में दो संस्कृतियां यूं घुली-मिली हैं मानो दोनों एक दूसरे की पूरक हों। पारिजात उपन्यास नासिरा शर्मा की एक ऐसी ही कृति है जो गंगा-जमुनी संस्कृति को परत-दर-परत खोलती और मानवीय रिश्तों की बुनावट को भाषा के एहसासों से पाठक के अंदर जीवंत करती है। पारिजात आज की पीढ़ी के सपनों, उसके निर्णय, माता-पिता के प्रेम, स्त्री की भारतीय और पाश्चात्य छवि के साथ गुरु-शिष्य के संबंधों और एक समुदाय विशेष के प्रति पाश्चात्य पूर्वाग्रह से घायल समाज जैसी संवेदनाओं को एक नए फलक में तर्कों के साथ बयां करता है।***

----------X----------

परिजात

यह उपन्यास सन् 2011 में प्रकाशित हुआ इस उपन्यास की कथा 504 पृष्ठों मे सिमटी है। इस उपन्यास के माध्यम से हिन्दू एवं विदेशी स्त्री की छवि भी दिखाई गई है। इसमें कोई भी धर्म दूसरे पर हावी नहीं होता। प्रभा और प्रहलाद एक ही विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं प्रहलाद अर्थशास्त्र के प्रोफेसर हैं और प्रभा अंग्रेजी विभाग में अध्यापन करती हैं फिर उनका प्रेम विवाह हो जाता है और उनके घर एक बेटा पैदा होता है जिसका नाम रोहन रखा जाता है। रोहन उनकी इकलौती संतान है। जिसका प्रभा ने बहुत लाड़-प्यार से पालन-पोषण किया तथा एक संस्कारी व्यक्ति बनाया बाहरी दुनिया के छलकपट से वह बिल्कुल अनभिज्ञ है। रोहन ने सेंट जोसफ कॉन्वेंट में पढ़ाई पूरी की। वह बड़ा होकर एलेसन नाम की लड़की से प्रेम करने लगता है जो अंग्रेज है और उससे शादी करना चाहता है। जब रोहन एलेसन को लेकर माँ के पास पहुँचा तो कहता है कि मम्मी इधर देखिए न "बोलो" बिना कुछ कहे प्रभा अपना चेहरा उस अजनबी अंग्रेज़ लड़की की तरफ मोड़ रोहन को देखती है और रोहन "समझ गया - आपको एलेसन पसंद आ गई।"1 लेकिन प्रभा कुछ बोल न पाई और हारे से स्वर में कहा "मेरे हलक से तुम्हारा फैसला नही उतरता उतरता"।2 लेकिन बेटे के प्यार ने उन्हें विवष कर दिया दोनों की शादी हो जाती है। फिर वे दोनों विदेश चले जाते हैं। एक साल बाद रोहन के घर बेटा पैदा होता है। जिसका नाम टेसू रखा जाता है ऐलेसन का ध्यान टेसू से ज्यादा अपनी नौकरी पर रहता है वह बहुत ज्यादा पैसा कमाना चाहती है। रोहन को ऐलेसन का टेसू को यूँ आया के सहारे छोड़ना अच्छा नहीं लगता एक दिन वह एलेसन से कहता भी है कि तुम नौकरी छोड़ दो नौकरी तो बाद में भी हो सकती है लेकिन टेसू का बचपन फिर लौट कर नहीं आएगा। रोहन टेसू की देखभाल करने के लिए स्वयं अपनी नौकरी छोड़ देता है घर पर फ्रीलांस करता है एलेसन को टेसू हमेशा सोया हुआ मिलता। जिंदगी कुछ सवालों, कुछ पसंद, कुछ नापसंद, ख़ुशी और झुँझलाहट के बावजूद अच्छी गुजर रही थी"3 रोहन को याद आता है कि रोहन की माँ टेसू की पैदाइश से हफ्ता भर पहले आ गई थी। ऐलेसन सारा दिन आराम करती और माँ टेसू को नहलाती, तेल मलती और रात को उठकर फीड तैयार करती एक दिन जब ऐलेसन की माँ आई तो वह टेसू को अपने साथ कमरे में ले गई तब माँ पलंग के सिरहाने सिर टिकाकर ऐसे बैठ गई जैसे कुछ छीन लिया हो तो रोहन ने कहा "माँ! चंद दिनों की बात है वह चली जाएँगी फिर टेसू आपके साथ ही सोएगा वह तो हमारा है, हमेशा आपके पास रहेगा"।4

सारा दिन ऐलेसन और उसकी माँ बाहर रहती सुबह स्विमिंग के लिए जाती और दोपहर का खाना बाहर होता। ऐलेसन की माँ एक दिन प्रभा को कहती है आप यहाँ से चली क्यों नहीं

www.ignited.in

जाती वहाँ मिस्टर प्रहलाद अकेले होंगे ऐलेसन बहादुर लड़की है वह सब संभाल लेगी। ऐलेसन ने भी प्रभा को कहा मैने बेबी को ट्रेंड करना है वरना ऑफिस कैसे जा पाऊँगी। प्रभा को रोहन से बात करने का मौका ही नहीं मिलता वह अपने काम में व्यस्त है। जब माँ के पास आता है तो ऐलेसन साथ होती है मन की बात मन में घुटकर रह जाती है। ऐलेसन को रोहन का सिगरेट, शराब पीना पसंद न था इसलिए सिगरेट के चलते ऐलेसन ने रोहन को न जाने कितनी बार कटघरे में खड़े कर यह साबित करने की कोशिश की कि वह एक लापरवाह बाप है उसे अपने बेटे के फेफड़ों की परवाह नहीं उसने इस बात की तारीफ कभी नहीं की कि नौकरानी के जाने के और बेटे के सोने के बाद वह घर कमरों राहदारी की सफाई करता कि कहीं कोई नन्हा सा कुत्ते का बाल गलती से उसके बेटे की बोतल या बिस्तर में न पहुँच जाए"।5

रोहन कई वर्षों तक सिगरेट, ड्रिंक और मांस को हाथ तक नहीं लगाता वह एक नए प्रोजेक्ट में उलझ जाता है उसे एक ऐसी स्थिति की तलाश है जहाँ पहुँच कर वह चीजों को बेहतर तरीके से हैंडल कर सके मगर ऐलेसन साथ देने की जगह टेसू को छोड़ कर लेट नाइट पार्टियों में वक्त गुजारती, टेसू की खाँसी, काम के दबाव और बाज़ार की पॉलिटिक्स ने रोहन को दिवाना बना दिया वह अपने को नार्मल रखने के लिए एक दिन सिगरेट और ड्रिंक का सहारा लेता है वह घर पर फोन करता है कि टेसू की तबीयत कैसी है? लेकिन वह परेशान हो जाता है घर पर कोई फोन नहीं उठाता नौकरानी की डयूटी भी सात बजे खत्म हो जाती है। जब रोहन को पता चलता है कि वह टेसू को बीमार छोड़कर पार्टी में गई हुई है और म्यूज़िक स्टेज के पास बैठी है जिस कारण उसे फोन की रिंग सुनाई नहीं दे रही तो उनमें बहुत बहस होती है बात बढ़ जाती है फिर मेज पर पड़ी चीजें एक दूसरे पर फेंकने लगते हैं इसी बीच रोहन का हाथ उठ जाता है जब रोहन ऑफिस पहुँचता है तो नौकरानी से कहकर बचच्चे को भी घर से उठवा लिया रोहन ने पत्नी और बच्चे के गायब होने की सूचना पुलिस को दी दो-तीन दिन बाद रोहन को थाने में से फोन आता है कि आपकी बीवी और बच्चा मिल गए हैं रोहन थाने जाता है उसे लॉकअप में बंद कर दिया जाता है। कोई ऐसा इल्ज़ाम न था जो ऐलेसन ने रोहन पर न लगाया हो "ड्रिंक, कॉलगर्ल, शराब पीकर ड्राइविंग, मार डालने की धमकी, पसली-हसली और कलाई की हड्डियाँ तोड़ने और पत्नी को अपाहिज बना देने की हालत, साथ में डॉक्टरी रिपोर्ट"। 6 ऐलेसन ने बेटे को नानी के साथ भेज दिया। रोहन का सारा पैसा, घर के ज़ेवर बैंक से निकलवाती है और घर का सारा फर्नीचर लंदन बुक कर वह खुद भी दो सप्ताह बाद चली जाती है रोहन लॉकअप में पड़ा रहता है। बाहर आने के बाद वह ऐलेसन और बेटे को बहुत ढूँढता है। एक दिन उसके वकील अहमद का फोन आता है वह कहता है- "बेटे का कुछ पता नहीं चल पाया कि वह कहाँ है। ऐलेसन ने पुरानी नौकरी भी छोड़ दी है अब वह पूरी तरह लापता है"।7वह परेशान हो जाता है। उधर प्रभा भी रोहन की परेषानी को और ज्यादा सह नहीं पाती और बेटे और पोते का दुख लिए परलोक सिधार जाती है। रोहन जब प्रयागराज एक्सप्रेस से इलाहाबाद पहुँचा तो उसके सामने उसकी माँ का चेहरा कौंध आया हमेशा वह उसे लेने प्लेटफार्म पर बाबा के साथ खड़ी दूर से हाथ हिलाती मुझे देखती वह हँसता हुआ दरवाजे पर आन खड़ा होता और रेलगाड़ी की धीमी होती रफ्तार के साथ कूदकर माँ के गले लग जाता लेकिन आज रोहन के पास माँ नहीं थी केवल उनकी बातें याद कर रो रहा था। जब वह घर पहुँचा तो बाबा की आवाज आती है कौन? उसका सारा वजूद सिहर उठा पैर जम गए। टेलिफोन पर सारी बातें आड़ में होती थी लेकिन अब आमने सामने खड़े होकर सब कुछ कहना है जो बाबा पूछेगें प्रो. दत्त ने रोहन से कहा- "बेटे तुम कुछ बातें समझ लो तुम्हारे पास कुछ वक्त होगा"।8 यह सुनकर रोहन कटकर रह गया। उन्होंने कहा यह घर मैंने बेच दिया है। इलाहाबाद में रहना अब मेरे लिए आसान नहीं रहा। मेरी तरफ से तुम आज़ाद हो।"9 रोहन को महसूस होता है कि यह सब उसके कारण हुआ है। बुढ़ापे में बाबा को तन्हा उस इलाके में रहने जाना होगा, जहाँ कभी उन्होंने जाने का सोचा न होगा।

रोहन अपने पिता के कहने पर रुही के पास जाता है ताकि उसका अकेलापन दूर हो सके। रुही प्रो. दत्त के भाई की बेटी है जिसकी शादी कासिम से होती है लेकिन एक कार दुर्घटना में कासिम का कमर के नीचे का हिस्सा सुन्न हो जाता है अपने हालात से दुखी होकर एक दिन आत्महत्या कर लेता है और रूही भरी जवानी में विधवा हो जाती है। उसकी माँ फिरदौसी भी छोटी उम्र में विधवा हो गई थी उन्हें ये बात बार-बार सताती है कि जो उनके साथ हुआ वही उनकी बेटी के साथ हुआ। फिरदौसी अपने घर में अकेली नौकरों के साथ रहती हैं जब कभी उनका मन उदास होता है तो वह अपनी सहेली सुमित्रा को बुला लेती या रूही को फोन कर लेती। दूसरी ओर रूही अन्ना बुआ के साथ अपने ससुराल वाली सफ़ेद कोठी में रहती है उसके सास-ससुर भी कासिम की मौत का दुख सह नहीं पाते उनके मरने के बाद घर की सारी ज़िम्मेदारी रूही के सिर पर है। रोहन जब रूही को देखता है तो पहचान नहीं पाता कि ये वही रूही है। इतने में आवाज गूँजती है "रोहन! अकेले आए? बाबा-आईमीन अंकल नहीं आए?"।10 सुस्त सी आवाज सुनकर रोहन का दिल बैठ जाता है। अन्ना बुआ ने चाय पानी पिलाया फिर दोनों मेज पर बैठ गए। अन्ना बुआ ने खाना लगाया रोहन के पेट में तो चूहे कूद रहे हैं ऊपर से लखनवी खाने की खुशबू उसे बेताब कर रही है

www.ignited.in

जाने कब से उसको घर का खाना नसीब नहीं हुआ था। रूही से खाना पूछने पर रूही ने कहा "मैं तो बस एक वक्त खाती हूँ" कभी-कभी वो भी नहीं" रूही के शब्द सुनकर रोहन कहता है रूही तुम कितना बदल गई हो, तो रूही "वही रूही जिसे तुम सब जानते थे वह कब की मर चुकी है उधार ली यह जिंदगी मुझे पहले वाला इंसान तो बना रहने नहीं दे सकती है। मुझे मेरी तरह देखने की कोई कोशिश नहीं करता है सब मुझ पर अपने को लादना चाहते हैं उनमें तुम भी मेरे बचपन के दोस्त। नहीं दुश्मन"।11 रूही ने गुस्से से नहीं बड़े ही उदास मन से कहा। वह हमेशा कासिम की यादों में खोई रहती। रोहन के आने के बाद रूही का मन लगने लगा था फिरदौस जहाँ यह देखकर खुश थी कि चलो रोहन के आने के बाद रूही खाना-पीना सही समय पर कर लेती है। अब वह शाम को बडे बुर्जुगों से मिलती है उनकी सारी समस्याएँ सुनती है और ट्रस्ट के लिए पैसे भी देती है। रूही रोहन को अपने जीवन की सारे बातें और कासिम की मौत का सच बता देती है जिसे सुन रोहन के पैरो तले ज़मीन निकल जाती है वह रूही के सिर को सहलाते हुए बच्चों की तरह उसे प्यार करता है। रोहन और रूही एक दूसरे के साथ अच्छा समय बिताते दूर-दूर तक कार में घूमने जाते रूही को अब अपनी जिंदगी बदली-बदली सी लगने लगती है। कुछ दिनों बाद जब रोहन जाना चाहता है तो यकायक रूही का पारा गर्म हो जाता है ताव में आकर बोलती है "जाओ कहीं भी जाओ मेरी बला से" रोहन के जाने के बाद वह फिर से उदास रहने लगती है वह रोहन के लिए तड़प उठती है फिरदौस उसकी ये हालत देख फिर से परेशान हो जाती है। फिर दो महीने के लिए उसकी सहेली मारिया आती है उससे रूही को रोहन की बीती जिंदगी के बारे में पता चलता है कि कैसे ऐलेसन ने रोहन को झूठे इल्ज़ाम में फंसाया है और उसका सब कुछ लेकर फरार हो गई है। यह सब सुनकर रूही "उफ! बस---मारिया अब बस करो।"12 इतना कहकर रूही फफक कर रो पड़ी और कहने लगी। "मैंने तो अपना गम किसी जश्न की तरह मनाया है मगर रोहन तो सारा ज़हर खुद ही पीता रहा।"13 रूही बहुत उदास रहने लगती है बेटी की ये हालत देखकर फिरदौस जहाँ कहती है "रूही, अब अपनी जिंदगी का कोई फैसला ले लो बेटी"14 रूही के मन में भी शादी की बात आती है वो लड़का रोहन ही है जो उसे पूरी तरह समझ सकता है वह रोहन को फोन कर वापिस बुलाती है जब वह घर पहुँचता है तो रूही तेजी से आगे बढ़कर उससे लिपट जाती है जब रोहन अपने कमरे की तरफ मूड़ा तो रूही उसका रास्ता रोककर खड़ी हो गई। "मुझसे शादी करोगे" रूही के इस बरताव से रोहन चकरा सा गया रूही ने रोहन से कहा अच्छी तरह सोच समझकर मुझे जवाब देना मैंने भी सोचने में एक साल का समय लिया है तुम्हें इन्कार करने का भी हक है अगर तुम इस शादी के लिए अपने को तैयार समझो तो अंकल से बात करना मैं मम्मी से बात करूँगी। फिरदौस जहाँ रूही की बात सुनकर थोड़ी देर तो खामोश रही और सोचने लगी कि ऐलेसन वापिस आ गई तो मेरी रूही फिर से - - - लेकिन बाद में वे इस फैसले से खुश हो गई। जब रोहन ने अपने पिता से बात की तो उनके कानों में प्रभा की आवाज़ गूँजी काश! हमारे रोहन को रूही जैसी कोई लड़की मिलती "रोहन और रूही की शादी हो गई। रोहन ने रूही को सीने से लगाया और कहा "सब कुछ इतना ही आसान था रूही - - - इतना ही आसान"16

निष्कर्ष

आज हमारी आर्थिक नीति ने भोगवादी संस्कृति के विस्तार को बहुत विकसित किया है और यह नीति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसका समर्थन दे रही है, इससे हमारे बीच परस्पर बिखराव आने लगा है और साथ ही साथ हमारे सम्बन्धों में भी दरार पड़ने लगी है। आज व्यक्ति ने अपनी प्रसिद्धि और आर्थिक रूप से मजबूत होने के लिए के पीछे अपने परिवार और समाज को भी भुला दिया है। इसी होड में वह अपने माता-पिता, बच्चे तक को भी भूल जाते हैं। आज के युग में अधिक आधुनिक बनती जा रही पीढ़ी और इससे परम्परागत मूल्यों का हो रहा ह्रास बताना ही शोध का मुख्य है। ऐसा इसलिए हो रहा है कि हम परस्पर प्रेम, त्याग, समपर्ण की संस्कृति से दूर होते चले जा रहे हैं। इसमें सांस्कृतिक परिवेश की गिरती गरिमा का ही चित्रण नहीं किया है बल्कि उनके मूल तक जाने का प्रयास भी किया है कहीं-कहीं इनका हल ढूँढने का प्रयास भी किया है।

संदर्भ सूची:

1. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 20
2. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 21
3. नासिरा शर्मा, 'पारिजात' पृष्ठ 129
4. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 21
5. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 244
6. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 299
7. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 198
8. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 10

www.ignited.in

9. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 10-11

10. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 45

11. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 167

12. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 300

14. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 300

15. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 451

16. नासिरा शर्मा, 'पारिजात', पृष्ठ 504

Corresponding Author

Rajni Sharma*

Research Scholar